सकते; अतः परतत्त्व के रूप में ब्रह्माण्ड की ही उपासना करते हैं। ब्रह्माण्ड भी श्रीभगवान् का एक रूप है।

अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम्।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम्।।१६।।

अहम्=मैं; **क्रतुः**=कर्मकाण्ड हूँ; **अहम्**=मैं ही; **यज्ञः**=यज्ञ हूँ; **स्वधा**=तर्पण; **अहम्**=मैं; **अहम्**=मैं; **औषधम्**=रोगहारी जड़ी; **मन्त्रः**=चिन्मय ध्वनि; **अहम्**=मैं; **अहम् एव**=मैं ही; **आज्यम्**=घृत; **अहम्**=मैं; **अग्निः**=अग्नि; **अहम्**=मैं ही; **हुतम्**=आहुति हूँ।

अनुवाद

क्रतु अर्थात् श्रौतकर्म मैं हूँ, यज्ञ अर्थात् स्मार्तकर्म मैं हूँ, पितृतर्पण मैं हूँ, औषधि और मन्त्र भी मैं हूँ तथा मैं ही घी, अग्नि और हवनरूप क्रिया हूँ।।१६।।

तात्पर्य

ज्योतिष्टोम् नामक यज्ञ भी श्रीकृष्ण का रूप है। इसी से श्रीकृष्ण का एक नाम 'महायज्ञ' है। पितृलोक को अर्पित स्वधा अथवा औषधि के रूप में घृत का हवन भी श्रीकृष्ण का रूप है। इस क्रिया में उच्चारित मन्त्र श्रीकृष्णमय हैं। यज्ञ में जिन दुग्धनिर्मित पदार्थों की आहुति दी जाती है, वे भी श्रीकृष्ण के रूप हैं। अग्नि को श्रीकृष्ण कहा गया है, क्योंकि पञ्चमहातत्त्वों में से एक होने के कारण वह श्रीकृष्ण की भिन्ना-शक्ति है। भाव यह है कि वैदिक कर्मकाण्ड में प्रतिपादित विविध यज्ञ पूर्ण रूप से कृष्णमय हैं। प्रकारान्तर से, ऐसा जानना चाहिये कि जो पुरुष कृष्णभक्तिनिष्ठ हैं, वे सब वैदिक यज्ञों का अनुष्ठान कर चुके हैं।

पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः।
वेद्यं पवित्रमोंकार ऋक् साम यजुरेव च।।१७।।

पिता=जन्मदाता; **अहम्**=मैं (हूँ); **अस्य**=इस; **जगतः**=ब्रह्माण्ड का; **माता**=माँ; **धाता**=पोषक; **पितामहः**=पितामह; **वेद्यम्**=जानने योग्य; **पवित्रम्**=पावन; **ओंकारः**=ओम् शब्दब्रह्म; **ऋक्**=ऋग्वेद; **साम**=सामवेद; **यजुः**=यजुर्वेद; **एव**=भी; **च**=तथा।

अनुवाद

मैं इस जगत् का पिता, माता, पोषण करने वाला और पितामह हूँ। मैं ही जानने योग्य परम पावन ओंकार हूँ तथा ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद भी मैं ही हूँ।।१७।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण-शक्ति की विविध क्रियाओं से ही इस चराचर सम्पूर्ण सृष्टि की अभिव्यक्ति है। संसार में हम अलग-अलग जीवों से नाना प्रकार के सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं। ये सभी जीव वस्तुतः श्रीकृष्ण की तटस्था शक्ति हैं; परन्तु